प्रेस विज्ञप्ति दिनांक **01- 05- 2008**

अखिल भारतीय सतनामी सम्मेलन संपन्न

विषय : सतनाम आन्दोलन का राष्ट्रीय एकीकरण एवं समाकलन – वर्तमान परिपेक्ष में

National integration & unification of Satnam Movement – in present scenario

इस्पात नगरी भिलाई के नेहरू सांस्कृतिक भवन सेक्टर– **1** में दिनांक **27** व **28** अप्रेल **2008** को दो दिन तक लगातार अखिल भारतीय सतनामी सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में छत्तीसगढ के प्रत्येक जिला एवं ब्लाक स्तर के प्रतिनिधियों के अलावा देश भर के कोने कोने से विभिन्न राज्यों से सतनामी भाग लिये। जिसमें हरियाणा, नारनौल शाखा व फरूखाबाद से श्री दिनेश कुमार साध की अगुवाई में प्रतिनिधि मंडल व महंत कमलेशदास प्रथम पावा की अगुवाई में कोटवा धाम बाराबंकी शाखा से पूरा प्रतिनिधि मंडल खास कर लखनऊ, बाराबंकी, बरेली व अन्य जनपद के साथ छपरा(बिहार) व जमशेदपुर (झारखण्ड) से अनेकों प्रतिनिधियों ने भाग लिये। रूकन पुर(खुरजा) गद्दी से सतनामी संत सबल दास के अनुयायी श्री सुरेश चंद जी की अगुवाई में प्रतिनिधि मंडल ने सम्मेलन में बढ चढ कर हिस्सा लिया। साथ ही सिद्ध गद्दी भूडकुडा (गाजीपुर) के महंत शत्रुघन दास जी के साथ अन्य प्रदेशों के प्रतिनिधि मंडल खास कर उडिसा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र (नागपुर व मुम्बई) से काफी संख्या में गणमान्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

सतलोक छत्तीसगढ के पावन भूमि में आयोजित इस सम्मेलन में सैकडों की संख्या में प्रत्येक जिला व ब्लाक स्तर से प्रबुद्ध सतनामी मंडल ने भाग लेकर इस कार्यकम को सफल बनाने में अमूल्य योगदान दिया। कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं। दिल्ली से प्रो हरिशचन्द्र जोशी, श्री सीया राम लहरे, उपमहाप्रबंधक श्री टी आर खुंटे, नागपुर से श्री राम नाथ गेन्ड्रें व अन्य सदस्य, उडिसा से ज्योति लाल बंजारे एवं ओम प्रकाश मनहरे, मध्यप्रदेश भोपाल से श्री गिरधर जांगडे, कोटवाधाम बाराबंकी से महंत कामलेश दास, बरेली से महंत हरिप्रतापदास, भुरकुडा (गाजीपुर)से श्रीमहंत शत्रुघन दास, छपरा(बिहार)से महंत वासुदेव दास एवं विजय दास, झारखण्ड से महंत अनिरूद्ध दास, नारनौल शाखा से श्री दिनेश कुमार साध, दीपक साध आदि अनेकों प्रतिनिधियों ने भाग लिया। छत्तीसगढ से प्रमुख प्रतिनिधियों के नाम इस प्रकार है बैलाडिला से डॉ देव नारायण, जगदलपुर से श्री मन्नू लाल चतुर्वेदी, कांकेर से डॉ स्वामी राम बंजारे, डॉ आर पी टण्डन, जशपुर से डी एल दिव्याकार, कोरबा से श्री टी आर मिरे, डी आर जाटवर, सी आर जांगडे, श्री मती रामबाई लहरे, व खाण्डे आदि,

बिलासपुर से भूत पूर्व सांसद श्री गोविन्द राम मिरी, श्री लखन लाल कोशले, श्री शिव कुमार केशकर, जी पी भारती, भाठापारा से डॉ गी सी जॉगडे, भुखन लाल कुर्रे एवं अन्य प्रतिनिधियों, रायपुर से डॉ पी आर घृतलहरे, डॉ जे आर सोनी, यशवन्त सतनामी, श्री निर्मल खुंटे, श्री रामशरण टण्डन, श्री एच एल रात्रे, डॉ विष्णुदत्त गेंड्रे, चन्द्र प्रकाश ओगरे, श्री टी आर वाघमारे, महासमुंद से डॉ ए डी पुरेना, धमतरी से ज्वाला बंजारे, रमेश कुमार लहरे, बलौदाबाजार से डॉ आर एस जोशी, हसौद से डॉ बी के महेश, दुर्ग भिलाई से श्री एफ आर जनार्दन, श्री के दास, श्री डी एल रात्रे, आर डी बंजारे, एन आर गिलहरे, डॉ पी बालकिशोर, डॉ एल एल मारकण्डे, डॉ एस आर बंजारे, श्री टी आर कोसरिया, श्री एम एल भतरिया, डॉ एम आर कुर्रे, श्री बी आर बंजारे, पुरानिक लाल चेलक, दादू लाल जोशी, एच एल घिदोडे, भजन दास बांधे, श्री टी दास, सहेतरू सिंह गेंड्रे, श्री परमेश्वर गेंड्रे, श्री कृष्णा डहरिया, श्री छत्तर लहरे, डॉ डी एस बंजारे, श्री के एल सावर्णी, श्री घना राम ढिढें, श्री शिवचरण दास बघेल, श्री आर डी जोगांश, डोमन लाल मधुकर, गोविंद कोशले, राज कुमार बंजारे, पवन कुर्रे, दल्ली राजहरा से श्री जे आर महिलांगे, डी के साण्डे के साथ समस्त प्रशिक्षित केडर आदि सैकडों प्रतिनिधियों ने चर्चा में खुल कर भाग लिया। चर्चा को मुख्य बिंदु रहे हैं ः

1.सम्पूर्ण भारतभूमि में सतनाम आन्दोलन से जुड़े लोगों को, भले ही वे अपने क्षेत्र में क्षेत्रीय प्रभाव के कारण अलग अलग तरीके से मान्यतायें मानते हो उन सबको एक मंच पर एक साथ पास पास लाना।

2.सतनाम के पुरोधा सन्त व गुरूओं का क्रमबद्ध सूचीकरण तथा उनके आन्दोलन का स्वरूप और प्रभाव का संकलन कर, एक योजनाबद्ध तरीके से सतनाम आन्दोलन को पूरे भारत में फैलाना ताकि सम्पूर्ण मानव समाज को इसका लाभ मिल सके।

3.सतनाम आन्दोलन के समान विचारधाराओं का संकलन व सतनाम धर्म जो विश्व का आदि धर्म है उसे जन कल्याण हेतु पुनजाग्रित करना।

4. सतनाम आन्दोलन को एकीकरण हेतु भारत के विभिन्न राज्यों में सम्मेलन व विचार गोष्टी अभियान चलाना।

5. सतनाम आन्दोलन का एकीकरण हेतु अखिल भारतीय सतनाम महासभा का गठन।

6. सतनाम आन्दोलन में व्यवहारिकता एवं गतिशीलता के सिद्धान्त को सहज और सरल तरीके से परिभाषित करना।

7. सतनाम मिशन के लिए आर्थिक सहयोग हेतु ।

कार्यक्रम **27** अप्रेल **2008** रविवार सुबह दस बजे से **28** अप्रेल **2008** सोमवार दोपहर दो बजे तक प्रतिनिधि सम्मेलन चला। यह ऐतिहासिक सम्मेलन सतनामी संग्राम के **336** वर्ष बाद प्रथम बार सम्पन्न हुआ। सन **1672** में औरंगजेब से सतनामी लडते हुये बिखर गये थे और देश के कोने कोने में जा बसे हैं। कठिन प्रयास के बाद पता लगाकर सबको एक मंच पर एक साथ पहले बार लाया गया जो अत्यंत सराहनीय एवं ऐतिहासिक कदम रहा है।

यह गर्व की बात है कि **336** साल बाद भी सतनामी मूल संस्कृति को यथावत बनाये रखें हैं भले ही वे क्षेत्र समयानुकूल कुछ परंपराओं में असर दिखाई पडता है पर वैचारिक सुदृढता के साथ आज भी भारत भर के करोंडो सतनामी एक हैं। रूढीवाद और अंधविश्वास से जुझते हुये अपने विचारधारा को बनाये रखें हैं। यह बात परिचय सत्र में खुल कर पता चला। सभी बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। अब तक ज्ञानात्मक पहलुओं पर छत्तीसगढ़ मे चर्चा प्रारंभ नहीं हुआ था पर इस सम्मेलन में खासकर ज्ञानात्मक पहलुओं पर विशेष चर्चा हुआ और यह निष्कर्ष निकला कि भारत के विभिन्न राज्यों में बसे करोडों सतनामी आज भी पूर्वजों के सुदृढ विचार धारा से पूर्णतः अवगत हैं। संत कबीर, संत उदादास व बीरभान, संत जगजीवन दास, संत सबल दास, गुरू घासीदास, गुरू बालकदास़ व भुडकुडा (गाजीपुर) के अनेकों सिद्ध गुरूओं की वाणी को प्रतिनिधियों के जुबान से सुनने व समझने का यह पहला अवसर मिला। सबने करतल ध्वनि से सतनाम आंदोलन की एक रूपता पर अपनी अटूट श्रद्धा पेश की। सम्मेलन में सारा माहौल सतनाम के वाणियों से गूंज उठा।

प्रतिनिधि सम्मेलन के अंत में एक ऐतिहासिक व महत्व पूर्ण निर्णय लिया गया वह यह है कि **सतनाम धर्म जो विश्व का एक मात्र आदि धर्म है का पुनर्जागरण करना व संवैधानिक मान्यता की दिशा में प्रयास करना।** इस मुद्दे पर सभी उपस्थित प्रतिनिधियों ने एक मत से अपने दोनों हाथ ऊपर खडा कर ध्वनि मत से करतल ध्वनि के साथ पारित किया। जिसकी विडियो रिकार्डिंग उपलब्ध है।

अन्य बिंदुओं पर भी एक मत से सबने अपने हाथ खडाकर एक साथ पूरे भारत देश में सतनाम धर्म को प्रचारित व प्रसारित करने के लिये विभिन्न आयामों पर प्रस्तावित किया। संपर्क सूत्र के रूप में श्री सुरेश चंद्र जी एवं प्रो एच सी जोशी का नाम सभी ने एक मत से स्वीकारा।

सतनाम मिशन को आगे बढाने के लिये तत्कालिन आर्थिक सहयोग भी उपस्थित प्रतिनिधियों ने दिये। जो इस प्रकार है टी आर खुंटे दिल्ली, पन्ना लाल सतनामी, अश्वनी रात्रे रायपुर, ज्योति लाल बंजारे उडिसा, यशवंत सतनामी रायपुर, प्रो एच सी जोशी दिल्ली, महेन्द्र कुमार साध फरूखाबाद, दिनेश साध मुम्बई, रूपेश साध दिल्ली, दीपक साध दिल्ली . राजू कोशले बस्तर, कोटवा धाम बाराबंकी शाखा, भिलाई से सुरसेन कुर्रे, पुरानिक लाल चेलक, दयालु दास, गजेन्द्र प्रसाद खिलारी, मित्र मंडल समिति, एफ आर जनार्दन, डॉ स्वामी राम बंजारे कांकेर, रामचरण खरे तखतपुर . कुंज बिहारी पटेला केशकाल . बली राम बघेल तखतपुर, आनंद बघेल भिलाई . संत ज्ञानेश्वर गायकवाड भिलाई, डॉ आर पी टंडन कांकेर, पूरन लाल गायकवाड रायपुर, मनी राम बनर्जी बिलासपुर, सी आर जांगडे कोरबा, डी आर जाटवर कोरबा, परमेश्वर गेण्ड्रे दादर, डॉ डी एस बंजारे मिनी माता नगर आदि। आर्थिक सहायोग पर समस्त उपस्थित प्रतिनीधियों ने एक मत से करतल ध्वनि के साथ, हाथ खड़े कर तन- मन- धन से सहयोग देने का संकल्प भी लिया। प्रतिनीधियों से आग्रह किया गया कि अपने अपने क्षेत्र मे जाकर जनमानस को सहयोग हेतु प्रोत्साहित करें। विभिन्न प्रदेशों से पधारे प्रतिनिधियों का सम्मान सत्य दर्शन संस्थान के प्रमुख श्री घनाराम ढिढे जी के नेतृत्व में पुष्प गुच्छ एवं श्वेत वस्त्र दे कर किया गया ।

दिनॉक **28** अप्रेल **2008** को तीन से चार बजे सारे शाखाओं के प्रमुख प्रतिनिधि मंडल के साथ सुपेला स्थित काफी हाउस में प्रेस कांफ्रेस लिया गया। पत्रकारों के भीड (जिसकी वीडियो रिकार्डिग की गयी है) में चर्चा करते हुये सतनाम धर्म के घोषणा की विस्तृत जानकारी प्रमुख प्रतिनिधियों द्वारा हस्ताक्षरित दस्तावेज भी पत्रकारों को दिया गया। टी वी चेनल ने भी अपना रिकार्डिग किया। पत्रकारों के सभी प्रश्नों का संतोष जनक उत्तर दिया गया। लेकिन यह खेद के साथ इस विज्ञप्ति में लिखना पड रहा है कि दूसरे दिन सुबह तक किसी अखबार ने प्रेस कांफ्रेस में पूछे गये प्रश्न व जवाबों का कहीं जिक्र तक नहीं किया। ब्लेक आऊट के साथ ब्लेकमेल करते हुए केवल नवभारत ने गुरू परिवार के सदस्य बालदास जी के संवंध में कुछ भ्रामक अंश जरूर छापे हैं। यहॉ यह स्पष्ट किया जाता है कि जैसा समाचार छापा गया है वैसा वक्तव्य किसी ने कहीं नहीं दिया है। मिडिया तंत्र से अनुरोध है कि यदि वे जन हित की सही समाचार नहीं छापते है तो न सही पर कृपया समाज में गलत फहमीं पैदा करने की कोशिष न करे। समाज से अनुरोध है कि ऐसे गुमराह करने वाले समाचारों से यथा संभव बचने का प्रयास करें और जरूरत पड़ने पर तत्काल स्पष्टीकरण लेने का प्रयास करैं।

ज्ञात हो कि सतनाम धर्म जो विश्व का एक मात्र आदि धर्म है और यह करोंडो जनता की भावनाओं के साथ देश हित व जन हित का प्रमुख विषय है। समाचार पत्रों ने इसका नोट नहीं लिया। महोदय हमे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि मीडिया जो समाज का प्रमुख स्तंभ होता है, वह ही आज जनता की भावनाओं व मुख्य धारा से हटकर कहीं सांप्रदायिक, राजनीतक गलियारों में भटका खोया, कोई और दिशा ढूढने में व्यस्त नजर आता है। ज्ञापन को लालायित चंद मुट्ठी भर शोषकों के हाथों का खिलौना बना हुआ है। आज यह स्पष्ट किया जाता है कि सतनामी कोई एक जाति नहीं नहीं वरन यह आदि काल से चला आ रहा सतपथ पर चलने वाला एक मात्र मानव धर्म है जिसे केवल अपने भीतर झांकने से पता चलता है। मानव कल्याण का एक मात्र रास्ता है इसे जन जन तक पहुँचाने में मीडिया से सहयोग की अपेक्षा की जाती है ।

दिनॉक **28** अप्रेल **2008** दिन सोमवार को संध्या काल में अखिल भारतीय सतनामी सम्मेलन का खुला सत्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई में में संपन्न हुआ। सैकडों की तादाद में लोगों की उपस्थिति रही । कार्यक्रम का प्रारंभ समाज प्रमुखों द्वारा दीप प्रज्वलित करके एवं श्री मंशा राम कुर्रे, श्री गजेन्द्र खिलाड़ी, श्री गोवर्धन टंडन व श्री गोविंद बर्मन द्वारा गुरू वंदना से प्रारंभ हुआ। दो दिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन में संपन्न कार्यक्रमों एवं लिये गये निर्णयों की जानकारियां माननीय टी आर खुंटे द्वारा दिया गया। जिसे खुला सत्र में उपस्थित जनों ने करतल ध्वनि से समर्थन व्यक्त किये। **221** वीं गुरू वंदना के अवसर पर श्री गोरे लाल बर्मन ने सतनाम मिशन को प्रचारित करने में कला एक सशक्त माध्यम है विषय पर अपना जानकारी दिये ।

इस अवसर पर नारनौल शाखा से श्री दिनेश कुमार साध, श्री सुरेश चंद्र रूकन पुर गद्दी आदि ने अपना विचार व्यक्त किये। डॉ जे आर सोनी, डॉ एस एल टोडर, श्री घनाराम ढिढे, श्री आर डी

जोगांश, श्री के आर मारकण्डे .श्री मती पिंगला देवी कुर्रे, श्री मती नैना बाई गायकवाड, श्री मती सुशीला टण्डन, श्री मती भानुमती कोसरे, श्री मती अमृतकला बंजारे, श्री मती सेजन बाई टण्डन एवं अन्य समाज प्रमुखों द्वारा नारनौल शाखा से श्री दिनेशकुमार साध, के अगुवाई में आये प्रतिधिगण, कोटवा धाम शाखा से महंत कमलेश दास के नेतृत्व में आये रायबरेली से महंत हरिप्रताप दास, छपरा से वासुदेव दास व विजय दास, झारखण्ड जमशेदपुर से अनिरूद्ध दास, रूकनपुर गद्दी सतनामी सन्त सबलदास के अनुयायी श्री सुरेश चंद्र जी व भानुप्रकाश एवं. उडिसा से ज्योति लाल बंजारे, ओम प्रकाश मनहरे आदि को सतनाम का प्रतीक स्मृति चिन्ह जैतखाम को भेंट कर सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्री गोरे लाल बर्मन, श्री यशवंत सतनामी, सतनाम भजन यामिनी ग्राम कातुल बोर्ड के संचालक व गायक श्री राजू लाल देशलरा, माटी हमर मिताान छत्तीसगढी कला मंच के संचालक भाई रामविलाश खुंटे, कोटवा धाम से महंत कामलेस दास द्वारा मनमोहक बासुरी वादन अत्यंत सराहनीय रहा। फिल्मी सितारे भानुमती कोसरे द्वारा सतनाम भजन, दिल्ली से आये भानूप्रकाश शर्मा साध सतनामी द्वारा सतनाम भजन, पूरनलाल गायकवाड, गोवर्धन टंडन, आदि ने प्रस्तुती दी। रात्रि में गुरू भंडारा आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में गुरू बालक दास सुरक्षा मोर्चा ने (बी एस एफ)अपना पूर्ण सहयोग दिया। साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों का सहयोग रहा। खार्यक्रम को सफल बनाने में सर्व श्री मंशा राम कुर्रे, पंचराम बंजारे, भुवन लाल कोसरिया, वेदानंद दिव्या, गोविंद बर्मन, सुरसेन कुर्रे, त्रिलोचन डहरे, गोवर्धन टंडन, गजेन्द्र खिलाड़ी, श्यामकुमार मनहर, राजेन्द्र कुमार बंजारे, हरिशंकर धृततलहरे, के एल सावर्णी, आनंद बघेल, संत ज्ञानेश्वर गायकवाड, डॉ डी एस बंजारे, रामाधार सायतोडे, बी आर बंजारे, परमेश्वर गेण्ड्रे, सांवत राम बंजारे, टी आर टण्डन, देवचंद आनंद, माखन लाल टण्डन, देवचंद नारंग आदि का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन एफ आर जनार्दन ने किया ।

(एफ आर जनार्दन)
सदस्य
आयोजन समिति
अखिल भारतीय सतनामी सम्मेलन
भिलाई दुर्ग छ ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिन्दी/अंग्रेजी दैनिक
....

संलग्न ः

1 सम्मेलन में पारित महत्व पूर्ण प्रस्तााव की छाया प्रति
2 कार्यक्रम का पाम्पलेट
3 कार्यक्रम की फोटोग्राफी